2015

HINDI

[Honours]

PAPER – III

Full Marks : 90

Time : 4 hours

The figures in the right hand margin indicate marks

Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable

Illustrate the answers wherever necessary

खण्ड — क

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 15×2

(क) "तुलसी की भक्ति-पद्धति में समन्वय की भावना है" — कथन की विवेचना कीजिए।

(*ख*) "सामाजिक शोषण, अनाचार, अन्याय और सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष में कबीर का काव्य आज भी प्रासंगिक है" — स्पष्ट कीजिए।

(*Turn Over*)

(ग) सूर के विरह-वर्णन पर प्रकाश डालिए ।

(घ) बिहारी की काव्यगत विशेषताओं की विवेचना कीजिए ।

(ङ) "केशव कठिन काव्य के प्रेत हैं" — कथन की समीक्षा कीजिए ।

(च) पठित अंशों के आधार पर घनानंद की प्रेम-व्यंजना पर विचार कीजिए ।

खण्ड — ख

2. निम्नलिखित में से किन्हीं *पाँच* की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए : 8 × 5

(क) चलन चलन सब कोई कहत है ।
ना जांनौ बैकुंठ कहां है ।।
जोजन एक परिमिति नहिं जांनै । बातनि ही बैकुंठ बखांनैं ।।
जब लग मनि बैकुंठ की आसा । तब लग नहिं हरि चरन निवासा ।
कहें सुनें कैसे पतिअइअै । जब लग तहां आप नहीं जइअै ।।
कहै कबीर यहु कहिअै काहि । साध संगति बैकुंठहि आहि ।।

(ख) बिरहा बिरहा मति कहै, बिरहा है सुलतान ।
जिहिं घट बिरह न संचरै, सो घट सदा मसांन ।।
सारा सूरा बहु मिलै, घायल मिलै न कोइ ।
घायल कौं घायल मिलै, तौ राम भगति दिढ़ होइ ।।

(ग) रे मन राम सौं करि हेत
हरिभजन की बारि करि लै उबरै तेरौ खेत ।
मन सुवा, तन पींजरा, तिहिं माँझ राखौ चेत ।
काल फिरत बिलार तनु धरि, अब घरी तिहिंलेत ।
सकल विषय विकार तजि तू उतरि सागर सेत ।
सूर भजु गोविंदगुन तू गुर बताए देत ।।

(घ) देव बड़े, दाता बड़े, संकर बड़े भोरे ।
किये दूर दुख सबनि के, जिन्ह-जिन्ह कर जौरा ।।
सेवा, सुमिरन, पूजिबौं, पात आखत थोरे ।
दियो जगत जहँलगि सबै, सुख, गज, रथ घोरे ।।
गाँव बसत बामदेव, मैं कबहूँ न निहोरे ।
अधिभौतिक बाधा भई ते किंकर तोरे ।।
बेगि बोलि बलि वरजिये; करतूति कठोरे ।
तुलसी दल रूँध्यो चहैं, सठ साखि सिहोरे ।।

(ङ) बानी जगरानी की उदारता बखानी जाय
ऐसी मति उदित उदार कौन की भई ।
देवता प्रसिद्ध सिद्ध ऋषिराज तप वृद्ध,
कहि कहि हारे सब कहि न काहू लई ।
भावी, भूत, वर्तमान जगत बखानत है
केशोदास क्यो हू न बखानी काहू पै गई
वर्णे पति चारि मुख, पूत वर्णे पाँच मुख
नाती वर्णौ षट्मुख तदपति नई नई ।।

(च) साजि चतुरंग वीर रंग मैं तुरंग चढ़ि
सरजना सिवाजी जंग जीतन चलत है ।
भूषन भनत नाद बिहद नगारन के
नदी नद मद गब्बरन के रलत हैं ।
ऐल फैल, खैल, मैल खलक मैं गैल गैल
गजन की ठेल पेल सैल उसलत है ।
तारा सो तरनि धूरि धारा मैं लगत, जिमि
थारा पर पारा पारावार यों हलत है ।।

(छ) तजि तीरथ, हरि-राधिका-तन-दुति करि अनुरागु ।
जिहिं ब्रज-केलि-निकुंज मग-पग-पग होतु प्रयागु ।।
मोहू दीजै मोषु, ज्यौं अनेक अधमनु दियौ ।
जौ बाँधै ही तोषु, तौ बाँधौ अपनै गुननु ।।

(ज) एरे बीर पौन ! तेरो सबै और गौन, बीरी
तो सो और कौन, मनै ढरको हीं बानि दै ।
जगत के प्रान, ओछे बड़े सों समान घन
आनंद निधान, सुखदान दुखियानि दै ।
जान उजियारे गुन भारे अंत मोही प्यारे,
अब ह्वै, अमोही बैठे, पीठि पहिचानि दै ।
बिरह बिथा की मूरि, आँखिन में राखौं पूरि,
धूरि तिनि पायनि की हाहा नैकु आनि दै ।

खण्ड — ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं *पाँच* पर टिप्पणियाँ लिखिए : 4 × 5

(*क*) तुलसी की काव्य-भाषा

(*ख*) सूरदास का वात्सल्य वर्णन

(*ग*) बिहारी के दोहों में नीति का चित्रण

(*घ*) केशव की अलंकारप्रियता

(*ङ*) भूषण की वीररस की रचनाएँ

(*च*) घनानंद की काव्य-भाषा

(*छ*) कबीर की विरह-भावना

(*ज*) रामचंद्रिका ।